युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 28 कुल पृष्ठ-8 29 दिसम्बर, 2022 से 4 जनवरी, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 मा. कृ.-14

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का 96वाँ बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया तथा विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गई

स्वामी श्रद्धानन्द जी की विरासत को सुरक्षित रखना हम सबका कर्त्तव्य – स्वामी रामदेव

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज वह देदीप्यमान नक्षत्र थे जिनकी चमक कभी कम नहीं पड़ सकती – स्वामी आर्यवेश

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए– स्वामी यतीश्वरानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ऐसे मसीहा थे जिनका मूल्यांकन करना सामान्य बात नहीं – स्वामी आदित्यवेश

स्वतंत्रता आन्दोलन के पुरोधा थे स्वामी श्रद्धानन्द – बिरजानन्द एडवोकेट

स्वामी श्रद्धानन्द जी का यह तपोवन हमें त्याग, बलिदान एवं समर्पण सिखाता है – डॉ. दीनानाथ शर्मा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी महराज के 96वें बलिदान दिवस के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के प्रांगण में स्थित यज्ञशाला में बृहद यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण के द्वार स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का विधिवत शुभारम्भ हुआ। यज्ञ के मुख्य यजमान के रूप में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी आदित्यवेश जी व श्री बिरजानन्द एडवोकेट, डॉ. दीनानाथ शर्मा (मुख्याधिष्ठाता) के अतिरिक्त गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. बिजेन्द्र शास्त्री व श्री अश्विनी कुमार ने यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ के ब्रह्मा युवा विद्वान् डॉ. योगेश शास्त्री ने बड़ी कुशलता के साथ यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञ में गुरुकुल के सभी अध्यापक, गुरुकुल के प्रमुख सहयोगी जन तथा सभी ब्रह्मचारी सम्मिलित

हुए। यज्ञ के उपरान्त कुल पताका का आरोहण स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने अपने कर–कमलों से किया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने कुल माता का गीत तथा ध्वज गीत गाकर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया।

दिन भर चलने वाले स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह का विधिवत उद्घाटन करते हुए उत्तराखण्ड सरकार के कैबिनेट मंत्री तथा जुझारू युवा संन्यासी स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने अपने उद्बोधन में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अमर सेनानी थे। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके ऐतिहासिक कार्य किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वतंत्रता आन्दोलन के शीर्षस्थ नेताओं में सबसे अग्रणी थे। ध्वजारोहण के उपरान्त शोभा यात्रा के रूप में गुरुकुल के ब्रह्मचारी व उपस्थित अन्य सभी आर्यजन सिंहद्वार तक शोभायात्रा लेकर गये जहाँ स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की प्रतिमा के समक्ष आम सभा का आयोजन किया गया।

हजारों की उपस्थिति में हुई इस आम सभा में उस समय विशेष कौतूहल का वातावरण बना, जब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज का सभा में आगमन हुआ। स्वामी रामदेव जी के ओजस्वी उद्बोधन से उपस्थित जनसमूह में जोश तथा नई आशा का संचार किया। उन्होंने कहा कि हम महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्य हैं। अतः हमें उनके बताये गये मार्ग को अपनाकर पूरे विश्व में वैदिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों को प्रचारित–प्रसारित करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि यदि स्वामीदयानन्द सरस्वती जी न होते तो आज स्वामी रामदेव भी इस रूप में आपके समक्ष नहीं होता। मेरे

अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का 96वाँ बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया तथा विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गई

जीवन का प्रत्येक कार्य महर्षि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी को समर्पित है। हम सभी को मिलकर ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे उनकी छवि गगन में सूर्य चन्द्रमा के समान चमकती रहे। उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद के 96वें बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि यदि हम स्वामी श्रद्धानंद के उपवन को सुरक्षित रख पाये तो यह उन्हें सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

श्रद्धांजलि सभा को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद वह दैदीप्यमान नक्षत्र थे जिनकी चमक कभी कम नहीं हो सकती। उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद के प्रारम्भिक जीवन से लेकर महात्मा मुंशीराम एवं स्वामी श्रद्धानंद बनने तक की जीवन यात्रा को अत्यन्त रोचक एवं सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि जिस लार्ड मैकाले की शिक्षा के विरुद्ध स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का बिगुल बजाया वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि मेरे जीवन को इस रूप में बदलने का श्रेय अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद के जीवन को जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक वकील थे और जालन्धर तथा लाहौर की अदालतों में उनकी वकालत की विशेष धाक थी, किन्तु उन्होंने अपनी वकालत को छोड़कर अपना सर्वस्व राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया था। मैं स्वयं कानून का छात्र था और अपनी एल.एल.बी. पूरा करने के साथ मैंने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की जीवनी पढ़ी तो मुझे प्रेरणा मिली कि मैं भी अपने जीवन को समाज एवं राष्ट्र के लिए लगाऊँ।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आज स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन के यथार्थ पक्ष को जानने की आवश्यकता है। उन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान किया था। वे ऐसे मसीहा थे जिनका मूल्यांकन करना सामान्य बात नहीं है।

इस अवसर पर आर्य विद्या सभा के कोषाध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी ने भी स्वामी श्रद्धानंद जी के राष्ट्रीय

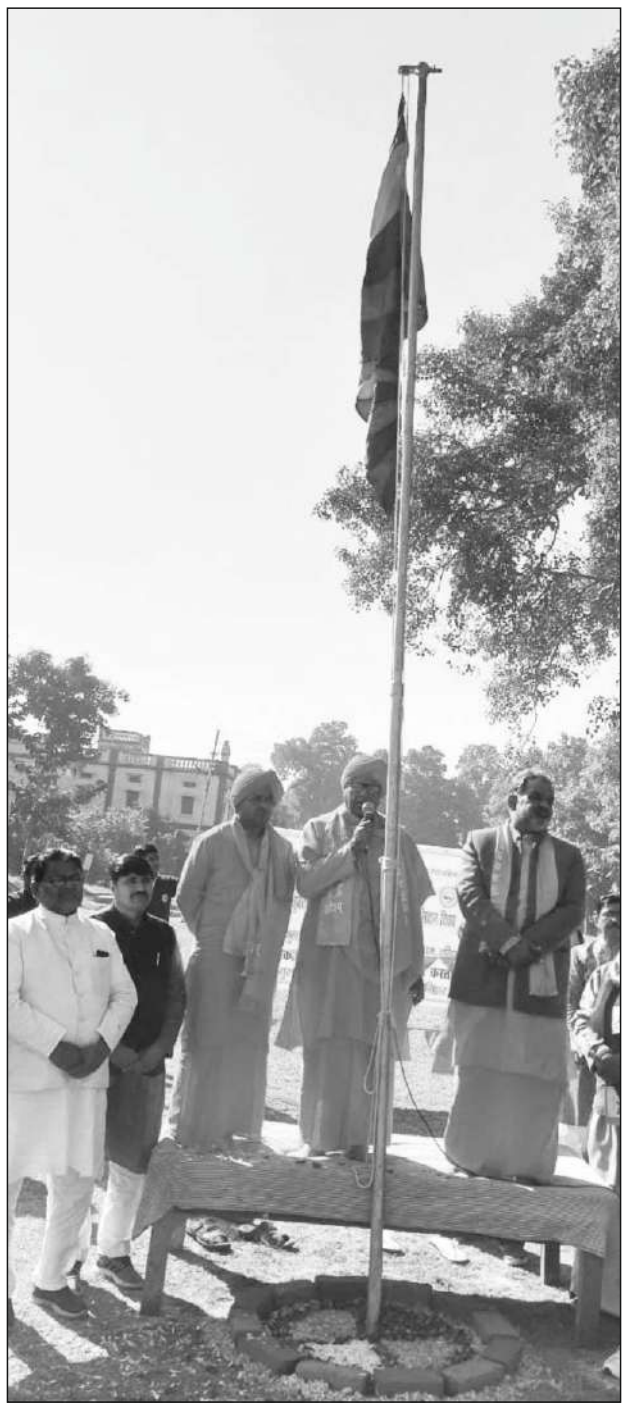

स्वरूप एवं उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वतंत्रता आन्दोलन के एक पुरोधा थे। उन्होंने अंग्रेजों के संगीनों के समक्ष अपनी छाती खोल दी थी। वे एक निर्भीक संन्यासी थे। आज उनके जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए।

इसके पश्चात् गुरुकुल के अधिकारी शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर वर्ग तथा जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा हरिद्वार के पदाधिकारियों ने स्वामी आर्यवेश जी के साथ स्वामी श्रद्धानंद चौक पर स्वामी जी को श्रद्धांजलि समर्पित की।

डॉ. नवनीत परमार (सहायक मुख्याधिष्ठाता), जीन्द से पधारे एडवोकेट रणवीर सिंह पहलवान, डॉ. बिजेन्द्र शास्त्री आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

सभा के मंच का संचालन डॉ. योगेश शास्त्री जी ने किया। इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के निर्माणाध्यक्ष भीम दत्त सेमवाल ने सभी अतिथियों एवं आगंतुक महानुभावों के स्वागत में अपने विचार रखे।

अन्त में श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता कर रहे मुख्याच्छिता डॉ. दीनानाथ शर्मा जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी का यह तपोवन हमें त्याग एवं बलिदान की याद दिलाता है। स्वामी श्रद्धानंद जी ने अपना सर्वस्व समर्पित करके यह स्थान बनाया था हमें सदैव इसकी रक्षा करनी चाहिए और उनके पथ पर चलना चाहिए। यह उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने सभी अतिथियों का स्मृति चिन्ह, शॉल भेंटकर स्वागत किया।

कार्यक्रम में गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा व विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित रहे। आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता मा. सुमन्त सिंह आर्य, जिला सभा के पूर्व प्रधान श्री हाकम सिंह आर्य, पूर्व मंत्री श्री तेलूराम आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम के पश्चात् सभी आगन्तुक महानुभावों के लिए गुरुकुल में प्रीति भोज की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक रहा।

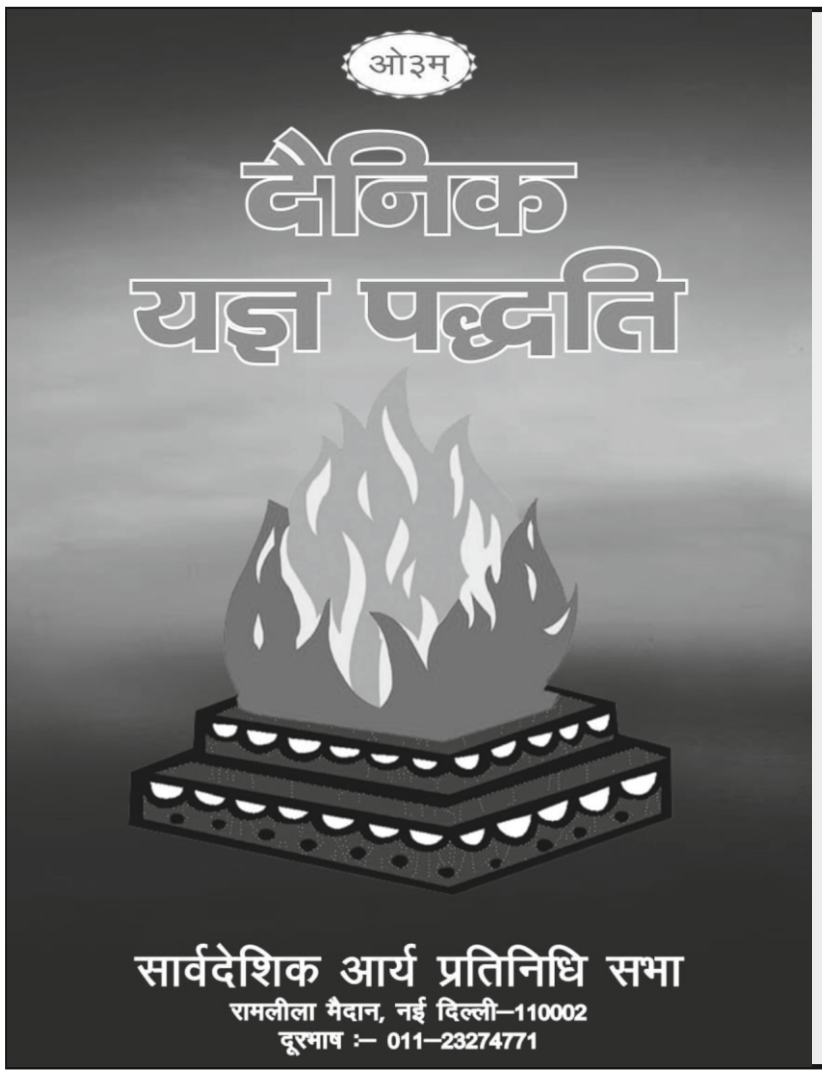

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

स्वामी दयानन्द के लघु ग्रन्थों पर एक दृष्टि

– श्रीमती चित्रा नाकरा

मानव के कार्य, विचार एवं व्यवहार में एक अन्तः सूत्र प्रवाहित रहता है। इसी प्रक्रिया में यदि हम अपने समय के अन्यतम विचारक, दार्शनिक व नवजागरण के अग्रदूत का विश्लेषणात्मक अध्ययन करें तो हमें एक स्पष्ट दृष्टि इस सम्बन्ध में मिलेगी, वह होगी 'सत्य' की। आर्य समाज की स्थापना, प्रचार कार्य, उपदेश, प्रवचन, शास्त्रार्थ, प्रश्नोत्तर, ग्रन्थ लेखन व वेदभाष्य इत्यादि में सर्वत्र यही सूत्र बिखरा दिखाई देता है। इसी के सम्बन्ध के कतिपय बिन्दुओं पर विचार अपेक्षित है। बाल्यकाल की तीन घटनाएं जो कि भिन्न-भिन्न कालान्तराल में हुई। इसी सूत्र से सम्बन्धित है। योगपथ के पथिक के रूप में भटकते हुए ज्वालानन्द, शिवानन्द सदृश योगियों के सान्निध्य में सीखा योग, हिमाश्मय नदियों का सन्तरण करते हुए जीवन त्याग की इच्छा के पश्चात् उत्पन्न सामाजिक कल्याण की चेतना से उद्बुद्ध परोपकार कार्यप्रवृत्ति, विरजानन्द से अविद्या, अज्ञाननाशक बनने की चाहत लिए पाखण्ड खण्डिनी के उत्तोलक, सर्वस्व त्याग देने वाले तथा पुनः तपस्या की ओर बढ़ने वाले, भागवत (पाखण्ड) खण्डन से प्रारम्भ कर सदियों से सामान्य जन से विलुप्त प्रायः कर दिए गए वेदों को आगे लाकर तथा उनका तात्पर्यार्थ व्यक्त कर सर्वत्र सत्य की ही साधना करते रहे।

लघु ग्रन्थों के रूप में उनकी कतिपय रचनाएं मिलती हैं जो सर्वत्र सत्यान्वेषण की स्पष्ट प्रतिमाएं हैं इनमें वेद विरूद्ध मतखण्डन, वेदान्तिध्वान्त निवारण, शिक्षापत्री ध्वान्त निवारण, भ्रान्ति निवारण, भ्रमोच्छेदन, अनुभ्रमोच्छादन तथा व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला, गो करुणा निधि व पंचमहायज्ञविधि प्रमुख है।

'सत्यार्थ प्रकाश' के पूर्वार्द्ध भाग में तथा उत्तरार्थ भाग में अन्तर यह है कि प्रथम तो विधि भाग है अर्थात् खण्डन की न्यूनता है तथा सिद्धान्त विषय का प्रतिपादन है (जो कि प्रथम से दस समुल्लास तक है) पश्चात स्वमन्तव्यों का स्पष्टोल्लेख है व अमन्तव्यों का भी। इसी भांति यहां उल्लिखित दस लघुग्रन्थों में छह खण्डन परक हैं तो चार खण्डन की प्रवृत्ति को लिए मण्डनपरक हैं।

वैदिक धर्म के विकृतस्वरूप में काल की कालिमा से अभिभूत हिन्दू धर्म में अनेक मतादि प्रचलित हो गए थे उनमें से कुछ तो सम्पूर्ण भारत में, तो कुछ प्रान्तविशेष तक सीमित रहे। 'वेद विरूद्ध मत खण्डन' नामक लघुकाय प्रश्नोत्तर रूप ग्रन्थ में वल्लभादि मतस्थों से प्रश्न व उसका खण्डन किया गया है। एक सांसारिक व्यक्ति की अपनी सीमाएं हैं, वह अपना कल्याण करने का अपरा प्रयास कर लें परन्तु किसी अन्य का मध्यस्थ बन उसे स्वर्ग लोक पहुँचा दें यह सर्वथा असम्भव है। पथमत 'स्वर्ग' नाम किसी स्थान विशेष का नहीं, क्योंकि सुख नाम ही स्वर्ग व 'दुःख' नाम नरक है। अतः यह कल्पना भी मिथ्या है। ईश्वर का स्वरूप चतुर्भुज, गोलोक वासी आदि मानना वेद के विरूद्ध है, क्योंकि वेद में उसका रूप 'स पर्य्यगात् शुक्रमकायमव्रणमस्नाविरम्' आदि से निराकार व 'न तस्य प्रतिमा अस्ति, यस्य नाम महद्यशः' आदि से मूर्तिरहित प्रतिपादित है। साथ ही ईश्वर के नाम पर कंठी व तिलक व अन्य निरर्थक आकृति धारण भी भ्रममूलक है। 'प्राणप्रतिष्ठा' भी वेदमन्त्रादिकों से की हुई भी व्यर्थ ही है, क्योंकि कोई भी कार्य मृण्मात्र में प्राणसंचार वा तद्वत् कार्य नहीं कर सकता। 'पुराण' का तात्पर्य भी सम्प्रति प्रचलित भागवातादि से नहीं अपितु 'इतिहास' से लेना चाहिए। 'ब्राह्मणग्रन्थ' जो कि वेदभाष्य ही है, भी पुराण का रूप ही है। ब्राह्मणानीतिहासः पुराणानीति' से सिद्ध है कि पुराण से यही अभिप्रेत है। यह भी स्पष्ट है कि व्यास जी के नाम से प्रसिद्ध प्रचलित पुराण उनकी रचनाएं नहीं हैं। ये किन्हीं अन्य संस्कृत भाषा एवं काव्यविदों की रचनाएं हैं। 'देव' शब्द से भी मूर्तियां नहीं अपितु 'विद्वांसो वै देवाः' लेना चाहिए। माता, पिता व गुरु भी देव तुल्य है। 'श्री कृष्णः शरणं मम' वाक्य भी वेदविरूद्ध व व्याकरण की दृष्टि से दूषित है। जैसे वेद और युक्ति से विरुद्ध वल्लभ का सम्प्रदाय है वैसे ही शैव, शाक्त, गाणपत्य, शोर और वैष्णवादि सम्प्रदाय भी वेद और युक्ति से विरुद्ध ही हैं।

आधुनिक वेदान्तियों के मत में वेदादि सत्यशास्त्रों के पठन-पाठन छूटने से ध्वान्त अर्थात् अन्धकार फैल गया है उसका निवारण 'वेदान्तिध्वान्त निवारण' में किया गया है। नवीन वेदान्तियों के मन में है - 1. जीव को ब्रह्म मानना, 2. स्वयं पाप करें और कहं कि हम अकर्त्ता और अभोक्ता हैं, 3. जगत को मिथ्या कल्पित मानते हैं।

ईश्वर, जीव व प्रकृति ये तीन तत्व हैं। तीनों ही जगत के भिन्न-भिन्न कारण व कार्य से परस्पर सम्बद्ध है। 'द्वा सुपर्णासयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते, तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति, अनश्नन्यो अभिचाकशीति' के अनुसार त्रैत का सिद्धान्त स्पष्ट है। कोई भी कर्म जो क्रियमान है संचित है या प्रारब्ध, उसका फल अवश्यंभावी है, अतः यह कहना कि कोई भी कर्म करके उसका फल न भोगे ठीक प्रतीत नहीं होता। इसी तरह जगत् को जो कि हमारे सम्मुख सत्यवत् है, मिथ्या मानना मूर्खता के अतिरिक्त कुछ नहीं।

शिक्षापत्री ध्वान्तनिवारण में सहजानन्दादि मतों के प्रति प्रश्न और उन मतों का खण्डन (स्वामिनाराणमतदोष दर्शनात्मकम्) किया गया है। जन्म, मरण, हर्ष, शोक, अल्पज्ञ अल्पशक्ति आदि गुण युक्त पुरुषविशेष कृष्ण के परब्रह्म भगवान पूर्ण पुरुषोत्तम आदि नाम नितान्त असम्भव है। एक सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्द स्वरूप, निर्दोष, निराकार, अवतार रहित वेद युक्ति सिद्ध परमात्मा को छोड़कर जन्म-मरण युक्त कृष्ण की उपासना करनी, यह जो सहजानन्द ने कहा है, इससे ज्ञात होता है कि उसको पदार्थ ज्ञान किञ्चित मात्र भी नहीं था। क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान अनन्त गुणयुक्त स्वभाव वाला होने से जीव के समान कभी नहीं होता। 'सहजानन्द' की बनाई शिक्षापत्री को पढ़ना, सुनना या पूजना किसी भी प्रकार कल्याण कारक नहीं हो सकता अतः यह मत त्याज्य है।

स्वामी दयानन्द के महान् कार्य वेदभाष्य के सम्बन्ध में शंकाएं उपस्थित की गई। वे लिखते हैं ''इस वेदभाष्य के विषय में पहले आर. ग्रिफिथ, सी. एच. टानी और पं. गुरुप्रसाद आदि पुरुषों ने कहीं-कहीं अपनी सामर्थ्य के अनुसार पकड़ की थी। सो उनका उत्तर तो अच्छे प्रकार दे दिया गया था, परन्तु अब पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न ने पूर्वोक्त विद्वानों का राग पकड़ कर सन के छूछे गोले चलाए हैं। इसलिए यद्यपि मेरा बहु अमूल्य समय ऐसे तुच्छ कामों में खर्च न होना चाहिए परन्तु दो बातों की सिद्धि समझकर संक्षेप से कुछ लेख करना आवश्यक समझता हूँ। एक तो यह है कि ईश्वरकृत सत्यविद्या पुस्तक वेदों पर दोष न आवे कि उनमें अनेक परमेश्वर की पूजा पाई जाती है और दूसरे यह कि आगे को सब मनुष्यों को प्रकट हो जाये कि ऐसी-ऐसी व्यर्थ कुतर्क फिर खड़ी करके मेरा काल न खावें। क्योंकि इससे कई कठिन शंका तो मेरे बनाए ग्रन्थों के ही ठीक-ठीक मन लगाकर विचारने से निवारण हो सकती है। फिर मेरा सर्वहितकारी काल क्यों खोते हैं।'' इस भूमिका से 'भ्रान्ति निवारण' पुस्तिका का सम्पूर्ण विषय स्पष्ट हो जाता है।

'काशी' भारत की सांस्कृतिक राजधानी मानी जाती है। अनेक विद्वान् यहां सारस्वत साधना करते रहे हैं। जिस विद्वान ने यहां से मान्यता प्राप्त कर ली उसका सर्वत्र मान्य हुआ। स्वामी दयानन्द ने अनेक बार काशी जाकर वहां के विद्वानों को ललकारा तथा अवैदिक मतों के प्रति दुराग्रह ग्रस्त विद्वानों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी। शास्त्रार्थ में उनकी विजय भी हुई, यद्यपि तत्रस्थ जनों ने बड़ा कोलाहल किया। उन्हीं में राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने कुछ आक्षेप स्वामी विशुद्धानन्द की सम्मति लिखवाकर प्रकाशित किये। यदि इस पर स्वामी विशुद्धानन्द की सम्मति न होती तो स्वामी दयानन्द जी उत्तर न भी लिखते परन्तु उनकी सम्मति के कारण भ्रमों का उच्छेदन करना उचित जान 'भ्रमोच्छेदन' पुस्तक प्रकाशित किया। इसमें राजा जी के विभिन्न प्रश्नों का आक्षेपों का युक्ति युक्त उत्तर दिया गया है। संहिता भाग वेद हैं ब्राह्मण ग्रन्थ उनके भाष्य वा कर्मकाण्डपरक हैं। उपनिषदों में भी 'ईशावास्योपनिषद्' ही वेदभाग हैं तथा अन्य ईश्वर प्रोक्त्र नहीं है।

'भ्रमोच्छेदन' के पश्चात भी राजा जी ने कुछ आक्षेप किए जिनका उत्तर 'अनुभ्रमोच्छेदन' नामक पुस्तिका में दिया गया। स्वामी जी ने अन्त में विवेचन किया कि 'कोई किसी की निन्दा न करे, सत्य को माने और झूठ को छोड़ दें। मेरा यहां यह अभिप्राय नहीं है कि किसी की व्यर्थ निन्दा करूँ या मिथ्या स्तुति। हाँ! इतना कहता हूँ कि जितनी जिसकी समझ है उतनी ही कह और लिख सकता है। मेरी धार्मिक विद्वानों से प्रार्थना है कि जो कुछ अन्यथा लेख हुआ हो तो क्षमा करें और अपनी प्रशंसनीय विद्यायुक्त प्रज्ञा से उसको शुद्ध कर लेवें। इस पर सत्य-सत्य का परामर्श का प्रकाश कर आर्यों को सुभूषित करें।''

बालकों को सुव्यवहार की शिक्षा देने हेतु एक पुस्तिका स्वामी जी ने लिखी। इसका नाम व्यवहार भानु रखा। इसमें पण्डित, मूर्ख के लक्षण, विद्या प्राप्ति के उपाय, विद्यार्थी के गुण, शिक्षा की आवश्यकता, धर्म-अधर्म के गुण, शिक्षा की आवश्यकता, धर्म-अधर्म के लक्षण तथा अनेक दृष्टान्त देकर समझाया गया है। 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' में 100 विषयों पर परिभाषा रूप में ईश्वर, धर्म, अधर्म, पाप, पुण्य, कर्म, कारण, अतिथि आदि को निरूपति किया गया है। यह लघु ग्रन्थ तथा स्वमन्तव्यामन्तव्य-प्रकाश का परिशिष्ट) वैदिक मत को समझने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। गोकरुणा निधि में पशुओं की रक्षा तथा उनसे उपकार लेने की बाबत लिखा गया है व 'गो कृष्यादि रक्षिणी सभा' बनाकर उन्नति की दिशा निर्दिष्ट की है। 'पंचमहाज्ञविधि' में आर्यों के दैनिक कर्त्तव्यों का प्रतिपादन है। इस प्रकार स्वामी जी के लघु ग्रन्थ उनके बृहत्काय सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका जैसे ग्रन्थों से महत्त्व में किञ्चिदपि कम नहीं है।

- प्रिंसिपल, डी. ए. वी., पब्लिक स्कूल,
विकासपुरी, नई दिल्ली

आर्य नेता एवं समाजसेवी वैद्य इन्द्रदेव जी आर्य का 85 वर्ष की आयु में निधन

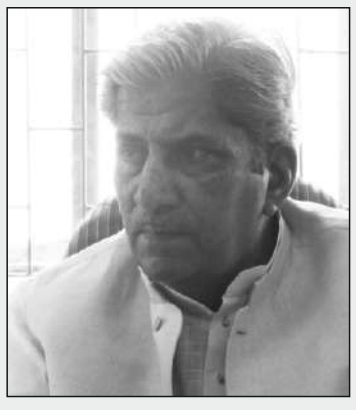

आर्य समाज के कर्मठ आर्य नेता एवं समाजसेवी वैद्य इन्द्रदेव आर्य जी का दिनांक 28 दिसम्बर, 2022 को प्रातः लगभग 6 बजे अस्पताल में उपचाराधीन अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 28 दिसम्बर, 2022 को ही दोपहर बाद 3 बजे दिल्ली के निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। वे लगभग 85 वर्ष के थे। वैद्य इन्द्रदेव जी अपने पिता के 6 पुत्रों में से सबसे छोटे सुपुत्र थे। वैद्य जी की चार सुपुत्री सभी विवाहित हैं। वैद्य इन्द्रदेव जी का पूरा परिवार आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने में अपना सहयोग हमेशा से करता रहा है। वैद्य इन्द्रदेव आर्य जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से भी जुड़कर कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये। वैद्य इन्द्रदेव आर्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री के पद पर रहते हुए अनेक परोपकारी कार्य किये। वैद्य जी आर्य समाज सदर बाजार, दिल्ली के भी कई वर्षों तक प्रधान रहे। उन्होंने आर्य समाज सदर बाजार के माध्यम से अनेकों सामाजिक कार्य करते रहे। वैद्य जी सदर बाजार व्यापार मंडल के अनेकों वर्षों तक अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने व्यापारियों की सुविधा के लिए अनेक कार्य किये। वैद्य जी का लगाव आर्य समाज के साथ–साथ राजनीतिक क्षेत्र में भी काफी सराहनीय रहा। ऐसे कमर्ठ, मिलनसार, प्रतिभा के धनी आर्य नेता एवं समाजसेवी का निधन आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। वैद्य जी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

23 दिसम्बर, 2022 को आर्य समाज आरा के श्रद्धानन्द भवन में डी.ए.वी. परिवार के साथ स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का 96वाँ बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपना सब कुछ आर्य समाज को समर्पित किया – रामानन्द प्रसाद

आर्य समाज आरा, बिहार के तत्वावधान में महान् स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी का 96वाँ बलिदान दिवस आर्य समाज आरा, बिहार के श्रद्धान्द भवन में डी.ए.वी. परिवार के साथ समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ बृहद यज्ञ हवन के साथ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ का कार्यक्रम प्रो. राम नारायण शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में संपन्न हुआ। तत्पश्चात ओ३म् का ध्वजारोहण आर्य समाज के जाने–माने आर्य नेता श्री रामानन्द प्रसाद जी के कर–कमलों द्वारा फहराया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री रामानन्द प्रसाद जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के उज्जवल भविष्य के लिए लगा दिया। महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द जी तक का सफल बहुत ही स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना सब कुछ आर्य समाज को समर्पित करके गुरुकुल कांगड़ी जैसी विश्व स्तरीय शिक्षण संस्थान खड़ी कर दी जिससे लाखों बच्चे पढ़कर आज देश तथा विदेशों में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। ऐसे महान् संन्यासी का आज हम सब 96वाँ बलिदान दिवस मनाने एकत्रित हुए हैं। हम सबको उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समाज के लिए कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मुख्य वक्ता प्रो. व्यास नन्दन शास्त्री जी ने अपने व्याख्यान में स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनेक संस्मरणों को सुनाते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी पूरे देश में जाति, पांति, छुआछूत आदि सहित अनेक बुराईयों के लिए खिलाफ कार्य करते हुए शुद्धि आन्दोलन का कार्य चलाया। पूरे आर्य

जगत में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जा चुका है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलकर समाज का मार्गदर्शन किया। इनके अतिरिक्त प्रो. राम नारायण शास्त्री जी, श्री अवध बिहारी मेहता जी, श्री सुदामा आर्य, श्री इंद्रमणि, श्री प्रकाश रंजन, श्री नीरज कुमार, श्री सत्यदेव गुप्ता जी ने भी अपने–अपने विचार रखे।

इस अवसर पर डी.ए.वी. के छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। छात्रों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से जुड़ी घटनाओं की झांकी प्रस्तुत करके सबका मन मोह लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में डी.ए.वी. के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता रामानंद प्रसाद ने की तथा संचालन श्री ज्ञानेवर प्रसाद ने बड़ी कुशलता के साथ किया। कार्यक्रम शांति पाठ के पश्चात् समाप्त हुआ।

शम्भु दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद में दिनांक 25 दिसम्बर, 2022 को स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर महायज्ञ के पश्चात् विशाल शोभा यात्रा निकाली गई

हमारी संस्कृति की रक्षा गुरुकुलीय पद्धति से ही हो सकती है–माया प्रकाश त्यागी

घर वापिसी का अभियान स्वामी श्रद्धानंद जी ने शुरू किया–अनिल आर्य

राष्ट्रीय एकता अखंडता की मिसाल थे स्वामी श्रद्धानन्द–आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री

दिनांक 25 दिसम्बर, 2022 को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के 96वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद (उ. प्र.) में महायज्ञ का आयोजन सम्पन्न होने के पश्चात् गाजियाबाद शहर के विभिन्न क्षेत्रों में शोभा यात्रा निकाली गई। यज्ञ का कार्यक्रम पूज्य स्वामी सूर्यदेव जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। मुख्य यजमान श्रीमती दीपा गोयल व अनुपम गोयल रहे। शोभा यात्रा का शुभारम्भ समाजसेवी श्री ओम प्रकाश आर्य जी ने ओ३म् ध्वज दिखाकर किया। विशाल शोभा यात्रा गांधी नगर, चौधरी मोड़, रेलवे रोड, बजरिया, घंटाघर, चौपला, डासना गेट, मालीवाड़ा चौक, अम्बेडकर रोड, कालका गढ़ी होते हुए सरस्वती शिशु मन्दिर के प्रांगण में जनसभा में परिवर्तित हो गई। समारोह में जनपद गाज़ियाबाद, हापुड़, ग्रेटर नोएडा के कोने–कोने से सैकड़ों आर्य प्रतिनिधियों ने उत्साह से भाग लिया। मार्ग में जिला गाज़ियाबाद से पधारे विभिन्न आर्य समाजों, स्कूलों के हज़ारों गणमान्य व्यक्तियों का व्यापारियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। शोभा यात्रा के अन्तर्गत विभिन्न आर्य समाजों की सुन्दर झांकियां भी प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर आर्य बंधु बालिका विद्यालय, गुरुकुल पटेल मार्ग, सन्यास आश्रम के छात्र एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के युवकों का व्यायाम प्रदर्शन विशेष आकर्षण का केंद्र रहा।

सरस्वती शिशु मन्दिर के प्रांगण में जनसभा का प्रारंभ सर्वश्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, सेवा राम त्यागी, सुरेन्द्र पाल सिंह, नरेश त्यागी आदि ने दीप प्रज्वलित कर किया। बिजनौर से पधारे भजनोपदेशक श्री मोहित शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुणगान करते हुए भजन प्रस्तुत किये।

समारोह के अध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी (कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने बताया कि लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति के द्वारा देश का विकास नहीं हो सकता। बच्चों में संस्कार व हमारी संस्कृति की रक्षा गुरुकुलीय पद्धति से ही हो सकती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की रक्षा ब्रह्मचर्य से होगी। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा है चाहे जीवन में सुख हो, चाहे दुःख हो, लाभ हो या हानि हो, जीवन में कुछ प्राप्त हो या न हो, सत्य को कभी मत छोड़ो। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अपने जीवन में परमात्मा के प्रति श्रद्धा रखें और आर्य समाज के उत्थान में अपना तन–मन और धन से सहयोग करें।

मुख्य अतिथि दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि बड़े सौभाग्य की बात है कि हम यहां किसी न किसी बहाने से इकठ्ठे हुए हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के ऐसे शिष्य थे जिन्होंने ऋषियों की परम्पराओं का पालन करते हुऐ गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की। उन्होंने उपस्थित जनसमूह से कहा कि संघर्ष करोगे तभी देश बचेगा।

आर्य नेता श्री अनिल आर्य जी (राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद) ने कहा कि घर वापिसी का मार्ग स्वामी श्रद्धानंद जी ने प्रशस्त किया। जो हिंदू किसी कारण से विधर्मी बन जाते थे, उनके घर वापिस आने का कोई उपाय नहीं था। स्वामी श्रद्धानंद जी ने इस गंभीर समस्या को समझा और यज्ञ द्वारा शुद्ध करके हजारों मुसलमानों को वापिस हिंदू धर्म में सम्मिलित किया। नारी शिक्षा के लिए जालंधर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना की, साथ ही पुरातन गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित किया। उनका बलिदान सदियों तक समाज का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। उनके बलिदान दिवस पर उन्हें याद करने का अर्थ है सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना, आपसी भाई–चारे से समाज व देश को मजबूत बनाएं, यही उनकी कथनी और करनी की समानता का प्रेरक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि आज फिर से शुद्धि आंदोलन चलाने की आवश्यकता है, जिससे जो लोग किसी कारण से विधर्मी हो गए थे उन्हें वापिस हिन्दू धर्म में लाया जा सके।

वैदिक विद्वान आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री (सहारनपुर) ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन भटकते लोगों के लिये प्रकाश पुंज के समान है।हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर देश की एकता अखंडता के लिये कार्य करना चाहिए,यह गर्व की बात है कि आर्य समाज के लोगों में देश भक्ति का जज्बा कूट–कूट कर भरा हुआ है जो अत्यंत प्रशंसनीय है।स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की ज्वलंत मिसाल थे।स्वामी श्रद्धानन्द ने विश्व बंधुत्व का जो संदेश हम सबको दिया तथा नैतिकता का पाठ पढ़ाया वह केवल भारत के पास है, पूरे विश्व में और कहीं नहीं मिलेगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय मंत्री श्री प्रवीण आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी कहते थे यदि आपकी परमपिता परमात्मा में पूर्ण श्रद्धा है तो भगवान आपके सारे कार्य पूर्ण करेंगे।

इस अवसर पर सर्वश्री श्रद्धानंद शर्मा, सुभाष गर्ग, नरेश गोयल,के. के. यादव, डा.अजय अग्रवल (पूर्व सी.एम.ओ.) ने भी अपने विचार रखे।

सभा का कुशल संचालन जिला गाजियाबाद आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सत्यवीर चौधरी ने किया।

सभा के महामंत्री श्री नरेन्द्र पांचाल जी ने दूर–दराज से पधारे गणमान्य अतिथियों का शोभा यात्रा व जनसभा में पधारने पर आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री तेज पाल सिंह आर्य, चौ.मंगल सिंह, सुरेश गर्ग, सुरेश आर्य, यज्ञवीर चौहान, वी. के. धामा, त्रिलोक शास्त्री, शिल्पा गर्ग, आशा आर्या आदि उपस्थित रहे।

आर्य समाज इन्दुरू व जिला आर्य समाज धर्म प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के 96वाँ बलिदान समारोह एवं स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक चिन्ह के अनावरण का विशाल समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान व सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य की गरिमामय उपस्थिति में आयोजित हुआ विशाल कार्यक्रम

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के 96वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आर्य समाज इन्दुरू, निजामाबाद एवं जिला आर्य समाज धर्म प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में निजामाबाद मर्चेन्ट एसोसिएशन के श्रद्धानन्द गंज स्थित भवन में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के स्मारक चिन्ह का अनावरण दिनांक 25 दिसम्बर, 2022 को भव्य समारोह में किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान व सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, श्री धनपाल सूर्य नारायण गुप्ता जी, श्रीमती नीतू किरण जी मेयर निजामाबाद, श्रीमती/श्री पंचरेड्डी प्रवलिका–श्रीधर जी कार्पोरेट म्युनिसपल, श्री मुक्का देवेन्द्र गुप्ता, पूर्व चेयरमैन म्युनिसपल निजामाबाद, श्री लाभि शेट्टी श्रीनिवास गुप्ता, अध्यक्ष मर्चेन्द एसोसिएशन, आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री हरिकिशन वेदालंकार, महामंत्री श्री वैंकट रघुरामलू एडवोकेट, कोषाध्यक्ष श्री अशोक श्रीवास्तव, श्री विजयेन्द्र आर्य, आर्य समाज के प्रधान श्री रामलिंगम् जी, मंत्री श्री मंकाला विजयकुमार जी, सूर्यवंशी विजयकुमार, धनाल कोटि वेंकट नसय्या, तिरुमल्ला श्रीनिवास, तुलसीदास, श्री प्रवीण, श्री श्रवण कुमार, श्री नारायण कोषाधिकारी आदि की गरिमामयी उपस्थिति में अनावरण समारोह का कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहवर्द्धक रहा। इस पूरे आयोजन के संयोजक आचार्य वेदमित्र ने बड़ी कुशलता के साथ कार्यक्रम का संचालन किया। स्मारक चिन्ह के अनावरण के उपरान्त मुख्य मंच से नेताओं तथा विद्वानों के व्याख्यान हुए। बीच–बीच में राधा कृष्ण विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने कार्यक्रम प्रस्तुत कर स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की घटनाओं को प्रदर्शित किया।

अपने उद्बोधन में आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान व सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को सर्वस्व त्यागी बताते हुए कहा कि उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति प्रेस तथा लाईब्रेरी गुरुकुल कांगड़ी को दान देकर सर्वमेद यज्ञ किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी देश के उन महापुरुषों में से एक थे जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में ऐतिहासिक योगदान दिया। उन्होंने ही जलियावाला बाग काण्ड के बाद जनता में व्याप्त भय को समाप्त करने के लिए कांग्रेस के अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बनकर अंग्रेजों को अमृतसर में ही कांग्रेस का विशाल अधिवेशन करके अंग्रेजों को चुनौती दी थी। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली का विकल्प प्रस्तुत किया था। ऐसे महान बलिदानी संन्यासी को आज हम यहां सभी लोग श्रद्धांजलि दे रहे हैं। हम सभी का यह कर्त्तव्य बनता है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के स्वप्नों को साकार करने के लिए संकल्प लें। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अछूतोद्धार का अभियान चलाया था। अतः हमें भी जातिवाद के खिलाफ प्रचण्ड अभियान चलाना चाहिए। प्रो. विट्ठलराव जी ने मर्चेन्ट एसोसिएशन एवं आर्य समाज इन्दुरू तथा जिला आर्य समाज धर्मसभा को आज के इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि अभी तक यहां के लोग स्वामी श्रद्धानन्द जी के बारे में अधिक नहीं जानते थे किन्तु आज के इस आयोजन से स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सभी लोग अच्छी प्रकार से परिचित हो गये हैं। आशा है कि भविष्य में इस क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के विचारों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए यहां की सभी आर्य समाजें अपना प्रयत्न जारी रखेंगी।

इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी

महाराज सही मायने में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के शिष्य थे। उन्होंने आर्य समाज एवं समाज सुधार के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों एवं मन्तव्यों को अक्षरशः धारण करते हुए उन्होंने अपना मकान आदि सब कुछ बेचकर आर्य समाज एवं गुरुकुल में लगा दिया। उन्होंने अपने बच्चों को गुरुकुल में दाखिला कराकर अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया था। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वतंत्रता सेनानी, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुरोधा, हिन्दी भाषा के प्रबल प्रचारक, शुद्धि आन्दोलन के सूत्रधार, सौहार्द के समर्थक, त्याग मूर्ति एवं उच्चकोटि के बलिदानी थे, उनका राजनैतिक कद तत्कालीन सभी नेताओं से ऊँचा था। वे निर्भीक एवं स्पष्टवादी संन्यासी थे। अपना सर्वस्व गुरुकुल एवं राष्ट्र के लिए समर्पित करके उन्होंने एक आदर्श प्रस्तुत किया था।

इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। आर्य समाज इन्दुरू की ओर से सभी आमंत्रित विद्वानों तथा अतिथियों को स्मृति चिन्ह, शॉल आदि भेंट कर स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम में पतंजलि योग समिति तथा विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी एवं कार्यकर्ता भारी संख्या में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम अत्यन्त सराहनीय एवं प्रशंसनीय था।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के मुख्य केन्द्र पं. नरेन्द्र भवन, हैदराबाद में स्वामी आर्यवेश जी व प्रो. विट्ठलराव आर्य जी की गरिमामयी उपस्थिति में

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के 96वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में पं. नरेन्द्र भवन, हैदराबाद में बलिदान समारोह का भव्य आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा तथा ऋषि सेना के कार्यकर्ताओं ने अपनी विशेष भूमिका निभाई। इस पूरे कार्यक्रम के संयोजक राचूरी अशोक आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ कार्यक्रम का संचालन किया। उनके प्रयत्न से कार्यक्रम में युवा वर्ग की भागीदारी विशेष रही। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, दयानन्द भवन समिति, मलकपेट के प्रधान श्री सुधाकर गुप्ता जी, आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह आर्य, उपप्रधान श्री हरिकिशन वेदालंकार, महामंत्री श्री वैंकट रघुरामलू एडवोकेट आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के प्रारम्भ में आर्य समाज के भजनोपदेशक श्री भीष्म आर्य बिजनौर के ओजस्वी भजनों का कार्यक्रम रहा। जिसे श्रोताओं ने दत्तचित्त होकर सुना। गुरुकुल वेद विद्यालय मलकपेट के ब्रह्मचारियों ने भी कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपनी प्रस्तुति दी। गुरुकुल के आचार्य श्री कुलदीप जी व श्री वेद मित्र जी भी उनके साथ कार्यक्रम में पधारे।

अपने उद्बोधन में श्री हरिकिशन वेदालंकार ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान युवाओं को समर्पण की प्रेरणा देने वाला है। ठा. लक्ष्मण सिंह आर्य ने अपने गजलें सुनाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को स्मरण किया। श्री रघु रामलू एडवोकेट ने भी स्वामी श्रद्धानन्द जी को एक वीर संन्यासी की उपमा देकर

शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानन्द और सर्व–धर्म सद्भाव

– श्री विश्वनाथ शास्त्री

भारतीय इतिहास में यह पहला अवसर था जब महर्षि दयानन्द ने अपने व्याख्यानों, शास्त्रार्थों और ग्रन्थों के द्वारा विदेशी धर्मों का खण्डन किया। भारतीय सम्प्रदाय और धर्म तो एक दूसरे का खण्डन करते ही रहते थे। 'शाक्त, 'शैव, वैष्णव सम्प्रदाय परस्पर एक दूसरे का खण्डन करते रहे हैं। आद्य शंकराचार्य ने जैनों और बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ किया और उनके धर्मों का खण्डन करके उनको परास्त कर वैदिक धर्म की स्थापना की। उनके प्रचार और शास्त्रार्थों से बौद्ध धर्म तो भारत में समाप्तप्राय हो गया। किन्तु मतखण्डन पूर्वक स्वमत स्थापना की परम्परा तो भारत में आदि काल से चली आ रही है।

महर्षि दयानन्द ने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में भारतीय धर्मों और विदेशी धर्मों का एक समान विधिवत् खण्डन किया है। इससे भारतीय धर्मों और विदेशी धर्मों के दुराग्रही अन्धविश्वासी लोगों में कुछ तनाव की भावना आई। इससे कुछ लोगों में यह धारणा बन गई कि महर्षि दयानन्द ने खण्डन के मार्ग पर चलकर दूसरे धर्मावलम्बियों के प्रति सद्भाव को छोड़ वैमनस्य का मार्ग अपनाया है। इससे भारत के विविध धर्मों के अनुयायियों के बीच तनाव बढ़ा है। अब हम कुछेक पंक्तियों में इस बात को स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे कि क्या महर्षि दयानन्द ने खण्डन का मार्ग अपना कर तनाव उत्पन्न किया है अथवा धर्म के इतिहास में एक नई जागृति उत्पन्न की है और प्रत्येक धर्म को वैज्ञानिक आधार पर खड़ा करने का यत्न किया है, सभी धर्मों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया है?

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश की रचना बड़े शुद्ध भाव और सत्यान्वेषण की दृष्टि से की है। वे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं– ''यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत में हैं वे पक्षपात छोड़कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो–जो बातें सबके अनुकूल सबके मत में है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरूद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़ कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इन हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है– सब मनुष्यों को दुख सागर में डुबा दिया है।'' महर्षि पुनः लिखते हैं– 'यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तारों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालों के साथ भी बर्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को बर्तना योग्य है।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश की उत्तरार्द्ध अनुभूमिका में एक सार्वभौम मत को प्रवर्तन करने के लिए लिखते हैं– जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विद्वज्जन ईर्ष्या–द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ने ही सबको विरोध जाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्य मत हो जाय।

शास्त्रार्थ परम्परा और सत्यान्वेषण का समर्थन करते हुए महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश की अनुभूमिका–२ में बारहवाँ समुल्लास आरम्भ करने से पहले लिखते हैं जब तक वादी–प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद या लेख न किया जाय तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। जब विद्वान् लोगों में सत्यासत्य का निश्चय नहीं होता तभी विद्वानों को महा अन्धकार में पड़कर बहुत दुख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है।

सत्यार्थप्रकाश के उद्धरणों से हमने यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि सत्यासत्य के निर्णय के लिए प्रीति से शास्त्रार्थ परम्परा को चलाना परम आवश्यक है और इसी दृष्टि से महर्षि ने अपने समय में प्रचलित सभी मतमतान्तरों की समीक्षा की है। अब हम महर्षि की जीवनी की ओर आते हैं और यह देखने का यत्न करते हैं कि उनका विविध धर्मों के अनुयायिओं के प्रति कैसा व्यवहार था। महर्षि संन्यासी होने के नाते **'सर्वभूतहिते रतः'** (सब प्राणियों का कल्याण करने वाले थे) वे 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' –दुष्ट के प्रति दुष्टता का व्यवहार–सिद्धान्त को मानने वाले नहीं थे। वे तो दुष्टों के प्रति भी सज्जनता का व्यवहार करते थे। वे कहा करते थे– यदि दुष्ट अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ते तो सज्जन अपनी सज्जनता को क्यों छोड़े? किसी कवि ने सज्जन का बड़ा सुन्दर लक्षण किया है:–

ते साधवः सुजन्मानस्तैरियं भूषिता धरा।
अपकारिषु भूतेषु ये भवन्त्युपकारिणः।।

उन सज्जनों का जन्म लेना सार्थक है और ऐसे सज्जनों से धरती शोभायमान होती है– जो दुष्टों का भी उपकार करते हैं।

सच पूछिए तो महर्षि ऐसे ही सज्जन थे।

महर्षि दयानन्द ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सिद्धान्त को मानने वाले थे। वे समस्त संसार को अपना परिवार समझते थे। उनके लिए अपने–पराये नाम की कोई बात नहीं थी। वे सब धर्मों में एकता लाना चाहते थे। उन्होंने सभी धर्मों के आचार्यों को एक मंच पर लाने का यत्न किया। उनकी जीवनी का एक प्रसंग यह है:– दिसम्बर १८७६ में दिल्ली में राजदरबार हो रहा था। वहां महारानी विक्टोरिया के महोत्सव के उपलक्ष में एक बड़ी राजसभा होने वाली थी। उसके लिए सभी राजे–महाराजे और प्रतिष्ठित नागरिक राज–निमंत्रण से वहाँ एकत्र हो रहे थे। कहा जाता है कि महाराजा इन्दौर ने ऐसे अवसर पर धर्म–प्रचार करने के लिए महर्षि को निमन्त्रित किया था। वे राजमण्डल में भी उनका भाषण कराना चाहते थे। राजदरबार के अवसर पर महर्षि के सत्संग का लाभ उच्चकोटि के लोगों ने उठाया। महर्षि तो चाहते थे कि राजाओं, महाराजाओं की सभा करके सब आर्यों में एक धर्म और एकता का तागा पिरो दिया जाय परन्तु अनेक कारणों से इसमें सफलता नहीं मिली। भारतीय राजाओं से आशा को सफल न होते देख एक दिन महर्षि ने अपने स्थान पर भारत के भिन्न–भिन्न मतों और जातीय नेताओं की एक सभा बुलाई। उनके निमंत्रण पर पंजाब के प्रसिद्ध सुधारक कन्हैयालाल जी अलखधारी, श्रीयुत् नवीनचन्द्रराय, श्री हरिशचन्द्र चिन्तामणि, सर सैय्यद अहमद खां, श्री केशवचन्द्र सेन और श्री इन्द्रमन जी– ये छह सज्जन वहाँ पधारे। वहाँ महर्षि ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि हम भारतवासी सब परस्पर एक मत होकर एक ही रीति से देश का सुधार करें तो आशा है भारत देश सुधर जावेगा, किन्तु कई मौलिक मतभेद होने के कारण वे सब एकता के सूत्र में सम्बद्ध न हो सके।

महर्षि दयानन्द को अपने सिद्धान्त प्यारे थे परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि वे अन्यों के सिद्धान्त की अवहेलना करते थे। वे बड़े सहनशील थे। वे पौराणिक या हिन्दू धर्म के मूर्ति–पूजा आदि सिद्धान्तों की शास्त्रीय दृष्टि से समीक्षा करते हुए भी हृदय को विशालता के कारण हिन्दू धर्म को उदार ही मानते थे। अपने जीवन के एक प्रसंग में वे १८७७ के लगभग अमृतसर पहुंचे। वहां के कमिश्नर की प्रार्थना पर महर्षि उनके बंगले पर पधारे। वार्तालाप करते हुए कमिश्नर ने कहा कि– ''हिन्दू धर्म को'' 'सूत के समान कच्चा' क्यों कहते हैं?'' महर्षि ने उत्तर दिया– ''यह कच्चा नहीं किन्तु लोहे से भी कड़ा है। हिन्दू धर्म समुद्र के समान है। इसमें अनेक अच्छे और बुरे मतों के तरंग विद्यमान हैं। इस धर्म में ऐसे भी लोग हैं जो अत्यन्त दयावान् हैं, सदाचारी हैं, परोपकार परायण रहते हैं और एक निराकार परमेश्वर को अपने मनो मन्दिर में पूजते हैं। इनके विपरीत वे लोग भी हिन्दू धर्म में पाए जाते हैं जो महाक्रूर, अनाचारी, वामी हैं; कोरे नास्तिक, अवतारों को मानने वाले हैं। यहाँ योगी, ध्यानी, तपस्वी और आजीवन ब्रह्मचारी रहने वाले भी विद्यमान हैं और ऐसे भी अनेक हैं– जिनका उद्देश्य आमोद–प्रमोद और संसार का सुख है। हिन्दू धर्म में जहाँ छूआ–छूत मानने वाले सैकड़ों हैं वहाँ सबके साथ भोजन करने वाले हजारों हैं। परमार्थ–दर्शी और तत्वज्ञानी लोग इस धर्म में उच्च पद के पाए जाते हैं और ऐसे भी मिल जाते हैं जो ज्ञान के पीछे डण्डा लिए डोलते हैं। उत्तम मध्यम और निकृष्ट विचारों–आचारों के सभी मत और उनके मानने वाले मनुष्य इस मार्ग में मिलते हैं। वे सभी हिन्दू हैं और उन्हें कोई हिन्दूपन से निकाल नहीं सकता इसीलिए हिन्दू धर्म निर्बल नहीं किन्तु परम सबल है।''

प्रायः सभी धर्म अपने मत को सर्वश्रेष्ठ और अन्यों को दीन समझते हैं। इस प्रवृत्ति के कारण वे अपने धर्म के विरुद्ध किसी बात को सुनना नहीं चाहते। इसी प्रवृत्ति के कारण भारत में प्रचलित सभी धर्म महर्षि के खण्डन से उनके विरोधी बन गए परन्तु महर्षि ने तो खण्डन का मार्ग सत्यासत्य के निर्णय के लिए अपनाया था। वे किसी के दिल को दुखाना नहीं चाहते थे। वे सैद्धान्तिक दृष्टि से सभी धर्मों का खण्डन करते थे, किन्तु सभी धर्मों के अनुयायियों से प्रेम करते थे, विरोधियों का भी हित किया करते थे। अपने हत्यारों को भी क्षमा कर देते थे और उनके कल्याण के लिए यत्न'शील रहते थे। महर्षि के जीवन से संबन्धित एक और घटना –लगभग १८६७ में वे अनूपशहर में प्रचारार्थ पहुंचे। वहां एक ब्राह्मण ने रुष्ट होकर उन्हें पान में विष दे दिया। महर्षि ने न्यौली कर्म करके विष को अपने शरीर से निकाल दिया। सैय्यद मुहम्मद तहसीलदार, जो महर्षि के भक्त थे, ने जब यह समाचार सुना तो ब्राह्मण को कैद कर लिया। तहसीलदार का विचार था कि मेरे इस कर्म से महर्षि प्रसन्न होंगे, किन्तु जब उसने महर्षि से यह बात बताई तो महर्षि अप्रसन्न हो गये और उन्होंने कहा कि– ''मैं दुनिया को कैद कराने नहीं बल्कि उसे कैद से छुड़ाने आया हूँ। वह यदि अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता तो हम अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़ें?

महर्षि का ईसाइयों के प्रति कैसा सद्भाव था? ईसाइयों के गिरजाघरों के प्रति उनकी कैसी भावना थी? यह जानने के लिए एक घटना का उल्लेख करते हैं जो महर्षि के जीवन से संबन्धित हैं–१८७६ के लगभग महर्षि बरेली पहुंचे। वहां उनके व्याख्यान होते थे। महर्षि का पादरी स्कॉट के साथ स्नेह सम्बन्ध था। वे नहीं आये तो महर्षि ने व्याख्यान के बाद पूछा कि भक्त स्कॉट क्यों नहीं आये? पता चला कि वे रविवार को गिरजाघर जाते हैं। महर्षि ने कहा कि चलो आज भक्त स्कॉट का गिरजाघर देख आएँ। महर्षि तीन चार सौ मनुष्यों के साथ गिरिजा में पहुंचे। महर्षि को आते देख पादरी स्कॉट वेदी पर से नीचे उतरकर आए और महर्षि को उपदेश देने के लिए प्रार्थना की। महर्षि ने उनके आग्रह पर वहाँ उपदेश दिया।

महर्षि का मुसलमानों के प्रति भी बड़ा स्नेहपूर्ण व्यवहार था और अभिजात वर्ग के मुसलमान भी उनका आदर करते थे। १८७३ के आसपास की बात है– महर्षि अलीगढ़ पहुंचे। वहां मुस्लिम युनिवर्सिटी अलीगढ़ के संस्थापक और प्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैय्यद अहमद खां महर्षि की सेवा में प्रायः नित्य आया करते थे। एक दिन सैय्यद साहिब कई प्रतिष्ठित मुसलमानों और अंग्रेजों सहित महर्षि की सेवा में उपस्थित हुए और अग्निहोत्र की उपयोगिता पर वार्तालाप होता रहा। १८७६ में दिल्ली में राजदरबार के अवसर पर महर्षि ने सर्वधर्म एकता का आयोजन किया। इस गोष्ठी में परस्पर सौहार्दपूर्ण वार्तालाप हुआ।

लगभग १८७७ में महर्षि लाहौर पधारे। उनको लाहौर बुलाने में अधिक हाथ ब्रह्म समाजियों का था। उन्होंने महर्षि के दो व्याख्यान अपने मन्दिर में कराए। प्रथम व्याख्यान 'वेद ईश्वरीय ज्ञान' विषय पर था और दूसरा 'पुनर्जन्म' पर। ये दोनों व्याख्यान ब्रह्म समाज के मन्तव्यों के विरुद्ध थे। इसलिए ब्रह्म समाजी उनका विरोध करने लगे। महर्षि पुराणों का भी खण्डन करते थे, इसलिए जिस उद्यान में महर्षि निवास करते थे उसके मालिक ने भी उनका विरोध किया। फलतः महर्षि के भक्त जन उन्हें डॉक्टर रहीम खां की कोठी में ले आए। यह कोठी भक्त छज्जू के चौबारे के पास थी। इस कोठी में महर्षि व्याख्यान देते और दूसरे दिन शंका समाधान करते थे। इसी कोठी में निवास करते हुए महर्षि ने आर्य समाज के संशोधित दस नियम बनाये तथा आर्य समाज लाहौर की स्थापना हुई जिसका पहला सत्संग भी यहीं हुआ। धन्य हैं महर्षि! और धन्य हैं डॉ० रहीम खां जिन्होंने सर्वधर्म सद्भाव का एक अनूठा उदाहरण हमारे सामने रखा।

महर्षि जब जोधपुर में प्रचारार्थ पधारे थे तो वे राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री बरकत उल्ला खां के दादा की कोठी में निवास करते थे। श्री बरकत उल्ला खां ने सर्वधर्म सद्भाव के नाते उस कोठी को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में दान कर दिया। ऐसे ही विरले अभिजात्य सज्जनों के सौजन्य से सर्वधर्म एकता की आदर्श भावना परम्परा से चली आ रही है।

महर्षि ने सर्वधर्म सद्भाव का अभियान चलाया था और आर्य समाज इस अभियान को अब तक चलाता आ रहा है। इतना ही नहीं मुस्लिम वर्ग भी आर्य समाज के इस सौहार्दपूर्ण अभियान का आदर करते हैं। आर्य समाज स्थापना शताब्दी दिल्ली १९७५ तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर १९८३ के अवसर पर मुसलमानों ने शोभा यात्राओं के समय अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की थी। प्रभु इस परम्परा को दोनों ओर से बनाए रखे। ●

96वें बलिदान दिवस पर स्वामी श्रद्धानन्द जी को दी श्रद्धांजलि

स्वामी श्रद्धानन्द जी सामाजिक समरसता के अग्रदूत रहे –मीनाक्षी लेखी

दलितोद्धार में स्वामी श्रद्धानन्द जी का अमूल्य योगदान– डॉ. अशोक कुमार चौहान

शुक्रवार 23 दिसम्बर, 2022 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, महान समाज सुधारक, गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी का 96वाँ बलिदान दिवस 14, महादेव रोड़, नई दिल्ली में सोल्लास मनाया गया।

मुख्य अतिथि केन्द्रीय विदेश राज्यमन्त्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन सामाजिक समरसता को समर्पित था। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना कर पुरातन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किया। स्वामी श्रद्धानन्द निर्भीक संन्यासी थे, उन्होंने कई मोर्चों पर अंग्रेजी हकूमत से लोहा लिया। उनके जीवन से आज प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की परंपरा से सनातन की रक्षा होगी। महिला शिक्षा को आज भुला नहीं सकते। आज हम स्वतंत्रता से यज्ञादि श्रेष्ठ कार्य कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि आज का युवा नशे की गिरफ्त में है, इसलिए आर्य समाज के कार्यकर्ताओं से मेरी अपील है कि वे अपने–अपने क्षेत्र में नशा मुक्ति आंदोलन चलाएं। जिससे राष्ट्र की धरोहर युवा पीढ़ी सुरक्षित रह सके।

समारोह के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान ऑनलाइन लाइव उपस्थित होकर अपने संदेश में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितोद्धार का सराहनीय कार्य किया और ऊँच–नीच की दीवार को मिटाने में अहम भूमिका निभाई। उनके समाज उत्थान के योगदान को सदैव स्मरण रखा जायेगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने धर्मांतरित हिन्दुओं का पुन शुद्धिकरण कर घर वापिसी का मार्ग प्रशस्त किया व इसी के लिए बलिदान हो गए। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए जालन्धर में महाविद्यालय की स्थापना की। वह सर्वदानी थे, उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के लिए अपनी कोठी व प्रेस बेचकर अपना सर्वस्व दान कर दिया।

आचार्या विमलेश बंसल ने कहा कि जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद उन्होंने अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन कर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया।

आचार्य गवेंद्र शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी के प्रवचनों को सुनकर उनके जीवन में बदलाव आया और वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बने। उन्होंने आर्य समाज को कुशल नेतृत्व प्रदान किया और अनेकों गुरुकुलों की स्थापना की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य विमलेश बंसल ने यज्ञ करवा कर किया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद जी के बाद सबसे अधिक कार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया।

इस अवसर पर भाजपा नेता श्री रमेश पहलवान, पार्षद कुसुमलता, श्री रमेश–पार्षद, श्री यशपाल आर्य, श्री प्रवीण आर्य (गाजियाबाद), श्री ओम सपरा आदि ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम के दौरान गायक नरेन्द्र आर्य सुमन, प्रवीन आर्या पिंकी, नरेश खन्ना, विजय पाहुजा, प्रवीण आर्य आदि ने मधुर गीत प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री सुभाष शर्मा (वरिष्ठ नेता भाजपा), देवेंद्र गुप्ता, यशोवीर आर्य, रामकुमार आर्य, अरुण आर्य, के. के. यादव, राजेश मेंहदीरत्ता, अभिषेक पाण्डेय, सुशील बाली, डा. सुनील रहेजा, डा. गजराज सिंह आर्य, यज्ञवीर चौहान, प्रमोद आर्य, शशिकांत शर्मा आदि उपस्थित रहे।

अध्यात्म पथ पत्रिका के तत्वावधान में ऑनलाइन स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

शूरता, वीरता, कर्मठता, निर्भयता, सहृदयता के साक्षात मूर्ति थे स्वामी श्रद्धानंद – आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

'अध्यात्म पथ' पत्रिका के तत्वावधान में दिनांक 25 दिसम्बर, 2022 को ऑनलाइन जूम के माध्यम से गीत संगीत एवं 'अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द' विषय पर प्रेरक उद्‌बोधन का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी गुरुकुल शिक्षा के प्रबल समर्थक, गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक, शुद्धि आन्दोलन के संवाहक, महान क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी, आर्य जगत के लिए सर्वस्व समर्पित करने वाले निर्भीक संन्यासी थे। उनके हृदय में पतितों, दलितों आदि के लिए अपार प्रेम, दया, करुणा थी। महर्षि दयानंद के सपनों को साकार करने वाले स्वामी श्रद्धानंद के विषय में सरदार वल्लभ भाई पटेल का कथन है की स्वामी श्रद्धानंद की याद आते ही 1919 का दृश्य मेरी आंखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में है। स्वामी जी छाती खोलकर ललकारते हुए कहते हैं लो चलाओ गोलियां, संन्यासी का छाती खुला हुआ है। उनकी इस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता। मैं चाहता हूं कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अंदर सदैव वीरता और बलिदान के भाव को भरता रहे। स्वामी श्रद्धानंद अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता थे। ब्रिटिश के प्रधानमंत्री रैमजे मैकडानल्ड ने स्वामी श्रद्धानंद के विषय में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा था वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान ईशा की मूर्ति को बनाने के लिए कोई जीवित मॉडल लेना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति के जिउ स्वामी श्रद्धानंद की ओर इशारा करूंगा। इस कथन से इतना तो सुनिश्चित है कि स्वामी श्रद्धानंद जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतना प्रभावशाली था कि न केवल भारतवर्ष के अपितु विदेशी लोग भी अत्यंत प्रभावित थे। लोक कल्याण के लिए अपनी समस्त संपत्ति दान कर देने वाला सर्व त्यागी अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद जी का संदेश है कि जब तक दम में दम है तो मनुष्य को बेदम नहीं होना चाहिए। अध्यात्म पथ के संपादक आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने आगे कहा कि हम सब इस बलिदान दिवस पर संकल्प लें कि हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के पद्‌चिन्हों पर चलने वाले सच्चे देशभक्त बनेंगे, शुद्धि कार्यक्रम को और अधिक प्रभावी बनायेंगे, बिछुड़ों को गले लगायेंगे।

कार्यक्रम के शुरुआत में श्रद्धा सूक्त के मंत्रों का पाठ किया गया तथा सर्वश्री श्रीमती कुसुम भंडारी, संतोष कुमारी, निर्मल विरवानी, शशि सिंघल, रविन्द्र गुप्ता, कमला हंस आदि के द्वारा स्वामी श्रद्धानंद के विषय पर सुंदर गीत की प्रस्तुति दी गई। इस कार्यक्रम में देश विदेश के अनेक गणमान्य जन सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम के अंत में आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा –

लेते हैं संकल्प, तुम्हारे पथ में बढ़ते जाएंगे।
शुद्धि आन्दोलन की सीढ़ी निर्भय चढ़ते जायेंगे।
दया दृष्टि हो अखिल सृष्टि में, ओ३म् सच्चिदानंद की।
जय बोलो, जय बोलो आर्यों, स्वामी श्रद्धानंद की।।

शांतिपाठ के साथ श्रद्धामय वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के मुख्य केन्द्र पं. नरेन्द्र भवन, हैदराबाद में .....

उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी। श्री सुधाकर गुप्ता जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के तप और त्याग से प्रेरणा लेने की अपील करते हुए कहा कि ऐसे महापुरुषों से ही समाज तथा राष्ट्र का निर्माण हुआ करता है। उन्होंने कहा कि दयानन्द भवन समिति के आग्रह पर स्वामी प्रणवानन्द जी के आशीर्वाद से प्रो. विट्ठलराव आर्य जी की विशेष प्रेरणा से हमने जो गुरुकुल प्रारम्भ करवाया है, मेरी इच्छा है कि उसे निकट भविष्य में हम पूरे देश में पहचान दिलवायें। स्वामी आर्यवेश जी का मार्ग दर्शन हमें इस दिशा में अवश्य चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं आर्य समाज के विचारधारा को आत्मसात करके ही आगे बढ़ रहा हूँ और इसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उपदेशों से मुझे दिशा मिल रही है।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में जहां स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन से सम्बन्धित अनेक संस्मरण सुनायें वहीं उन्होंने आगामी 2024 में आने वाली महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशती को भव्य रूप से मनाने की संक्षिप्त योजना प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि 2024 तक महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं उनके योगदान को पूरे विश्व पटल पर ले जाने के लिए हम प्रयत्नशील हैं। स्वामी जी ने केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि दिल्ली के निकट जेवर में बनने वाले अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती रखा जाये। इसी प्रकार प्रदेश में प्रान्तीय सरकारें और केन्द्र सरकार महर्षि दयानन्द को समर्पित कोई न कोई स्मारक अवश्य बनायें। महर्षि दयानन्द जी के जन्मस्थली टंकारा में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन आयोजित करके पूरे विश्व के आर्यों को भावी कार्यक्रम दिया जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि 2025 में आर्य समाज की 150वीं जयन्ती मनाई जायेगी उस वर्ष में हम आर्य समाज के सामाजिक कार्यों को लोगों के समक्ष रखें और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अपने अभियान को तीव्र गति प्रदान करें। ऐसी योजना बनाई जानी चाहिए। 2026 में स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान शताब्दी मनाई जायेगी। यह वर्ष समस्त गुरुकुलों और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रचारित व प्रसारित करने में समर्पित किया जाये। इसी प्रकार 2027 में राम प्रसाद बिस्मिल की बलिदान शताब्दी होगी और उस वर्ष में लाखों युवाओं को आर्य समाज में दीक्षित करने का एक रचनात्मक कार्यक्रम बनाया जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि शीघ्र ही इन सभी योजनाओं को लिखित रूप में तैयार करके आर्य जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महराज के बलिदान दिवस को देश में साम्प्रदायिक सौहार्द, जातिमुक्त तथा नशामुक्त समाज व धार्मिक अन्धविश्वास मुक्त समाज के निर्माण के रूप में मनाना चाहिए। आज सारे देश में सामाजिक कुरीतियाँ निरन्तर बढ़ रही हैं। अतः स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्य और उनका व्यक्तित्व आज भी उतना ही प्रासंगिक है। स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीय आन्दोलन के महान नेता थे। अमृत महोत्सव के अवसर पर देश की जनता और सभी सरकारें स्वामी श्रद्धानन्द जी के स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान को स्मरण करके उनकी स्मृति को स्थाई रूप देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर भव्य स्मारक खड़ा किया जाये।

इस अवसर पर प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी से जुड़ी घटनाओं को सुनाते हुए कहा कि उन्होंने अपना पूरा जीवन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को समर्पित किया। उनका जीवन निःसंदेह प्रेरणादाई था। उन्होंने कहा कि जब गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में समाज सुधार के लिए कार्य कर रहे थे तो अर्थाभाव के कारण वे निराश हो गये थे, क्योंकि विरला जी ने पैसा भेजना बन्द कर दिया था, उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के दूध का पैसा बचाकर गांधी जी को भेजना प्रारम्भ किया। जग गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आये तो उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी से मिलकर उनका धन्यवाद ज्ञापित किया। ऐसे थे महान संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी जिनकी अनेक ऐसी घटनाएं हैं जिन्हें पढ़कर रोम–रोम प्रफुल्लित हो उठता है। आज आवश्यकता है स्वामी श्रद्धानन्द जी के विचारों एवं कार्यों को आगे बढ़ाने की। हम सब मिलकर स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं स्वामी दयानन्द जी के स्वप्नों को पूरा करने में अपना तन–मन–धन समर्पित करें।

कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। कार्यक्रम के अन्त में प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसे सभी ने ग्रहण किया।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वान् स्व. प्रो. रतन सिंह जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जया कुमारी जी की स्मृति में उनके सुयोग्य सुपुत्र श्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट ने

श्री शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद में स्मृति सभा एवं यज्ञ का किया आयोजन

यज्ञ में 35 बाल्मिकी परिवारों ने उत्साह के साथ भाग लिया

जन्म के आधार पर ऊँच–नीच मानना वेद विरुद्ध है – पं. माया प्रकाश त्यागी

जन्मना जाति के आधार पर समाज को बांटना बन्द हो – स्वामी आर्यवेश

सत्यकेतु सिंह ने अपने माता–पिता को सच्ची श्रद्धांजलि दी है – रमेशचन्द्र तोमर

समाज में सौहार्द का वातावरण बनाने के लिए यह आयोजन किया है – सत्यकेतु सिंह

शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद के मुख्य स्तम्भ श्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट ने अपने पूज्य पिता स्व. प्रो. रतन सिंह एवं पूज्या माता स्व. जयाकुमारी की स्मृति में 24 दिसंबर, 2022 को एक विशेष स्मृति सभा एवं यज्ञ का आयोजन आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी एवं शम्भू दयाल संन्यास आश्रम गाजियाबाद के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में किया। यज्ञ में बाल्मिकी समाज के 35 स्त्री–पुरुषों ने सम्मिलित होकर इस कार्यक्रम को रचनात्मक बनाने में अपना विशेष योगदान दिया। यज्ञ के मुख्य यजमान भी श्री सत्यकेतु सिंह तथा उनकी धर्मपत्नी ने स्वयं न बनकर एक बाल्मिकी दम्पत्ति श्री प्रदीप कुमार व श्रीमती रेखा को बनाया। यज्ञ में अन्य बाल्मिकी महिलाओं एवं पुरुषों ने श्रद्धा के साथ आहुतियाँ प्रदान करके समाज को एक नया संदेश देने का कार्य किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, पूर्व मंत्री श्री बालेश्वर त्यागी एवं पूर्व सांसद श्री रमेश चन्द्र तोमर ने भी सभा में सम्मिलित होकर श्री सत्यकेतु सिंह व उनके पूरे परिवार को इस विशेष कार्यक्रम के लिए शुभकामनाएं देकर उत्साहित किया और स्व. प्रो. रतन सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जया कुमारी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

यज्ञ के उपरान्त स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने वेद के मन्त्र की व्याख्या करते हुए बताया कि परमात्मा ने सभी मनुष्यों को एक मानव जाति के रूप में पैदा किया है। किन्तु समाज की संकीर्ण मानसिकता के कारण आज जाति के आधार पर पूरे समाज को विभाजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जन्म से कोई छोटा–बड़ा नहीं होता, बल्कि गुण, कर्म और स्वभाव से व्यक्ति की पहचान होनी चाहिए। वेद गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था का विधान करते हैं। आज के इस कार्यक्रम में बाल्मिकी समाज के भाई–बहनों को सम्मिलित करके श्री सत्यकेतु सिंह ने सच्चे अर्थों में अपने माता–पिता को श्रद्धांजलि देने का कार्य किया है। मैं उनके इस कार्य की मुक्तकंठ से प्रशंसा करता हूँ। उन्होंने सभी बाल्मिकी परिवारों से आग्रह किया कि वे आर्य समाज से जुड़ें। जहाँ उन्हें इतना सम्मान दिया जा रहा है।

पूर्व सांसद श्री रमेश चन्द्र तोमर जी ने श्री सत्यकेतु सिंह व उनके पूरे परिवार को इस सुन्दर आयोजन के लिए बधाई दी और समाज के दबे–कुचले लोगों को मुख्यधारा में लाने तथा उन्हें विशेष सम्मान प्रदान करने के लिए मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने स्व. प्रो. रतन सिंह जी के व्यक्तित्व को भी एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व बताया और अपनी श्रद्धांजलि देते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने की अपील की।

यज्ञ के ब्रह्मा तथा सभा के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि छुआछूत तथा जाति प्रथा समाज को कमजोर करती है। किसी की योग्यता का पैमाना जन्म आधारित नहीं हो सकती, बल्कि उसके गुण, कर्म व स्वभाव हो सकते हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को इस युग का एक क्रांतिकारी संन्यासी बताया और उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी समाज में आमूल–चूल परिवर्तन चाहते थे। वे सामाजिक न्याय तथा समतामूलक समाज के पक्षधर थे। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में कहा है कि यदि ब्रह्माण का बेटा अनपढ़ रह जाये तो शूद्र के घर और शूद्र का बेटा यदि पढ़–लिखकर विद्वान् हो जाये तो ब्राह्मण के घर परिवर्तित कर देना चाहिए। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी विचार देते हुए कहा था कि यह जाति नियम और राजनियम होना चाहिए कि प्रत्येक बालक विद्यालय में जाये। अर्थात् राष्ट्र में शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। एक भी बच्चा विद्यालय से बाहर नहीं होना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि चाहे कोई राजकुमार हो या राजकुमारी अथवा दरिद्र की सन्तान हो, सबको तुल्य वस्त्र, खान–पान और आसन मिलने चाहिए। इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती अनिवार्य शिक्षा, निःशुल्क शिक्षा एवं समान शिक्षा को समाजोत्थान के लिए आवश्यक मानते थे। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी बाल्मिकी यजमानों व उपस्थित सदस्यों को वेद मंत्र बोलकर पुष्प वर्षा के साथ आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद में उनके साथ पं. माया प्रकाश त्यागी, श्री सत्यकेतु सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मीरा तथा अन्य विद्वत्जन भी सम्मिलित हुए। सभी बाल्मिकी स्त्री–पुरुषों को श्री सत्यकेतु सिंह के परिवार की ओर से संस्कार विधि भेंट कर स्वागत किया गया।

कार्यक्रम के पश्चात् प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसमें सभी उपस्थित लोगों ने भाग लिया। भोजन वितरण में बाल्मिकी समाज के युवा कार्यकर्ता भी सम्मिलित रहे। इस अवसर पर श्री संजीव आर्य, श्री अनिल आर्य को विशेष धन्यवाद दिया गया जिन्होंने बाल्मिकी भाईयों को यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। यज्ञ एवं भोजन आदि की व्यवस्था को सुन्दर तरीके से करने में आश्रम की कार्यकारिणी के सदस्य श्री वेद व्यास जी, आश्रम के उपाचार्य श्री जितेन्द्र कुमार, श्री मनोज कुमार एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने विशेष योगदान दिया। यज्ञ में वेद पाठ आश्रम के ब्रह्मचारियों ने सुन्दर तरीके से करके सभी को प्रभावित किया। यह कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरणादायक रहा। सभी को इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए जिससे समाज में व्याप्त जातिवाद की बुराई को खत्म किया जा सके और पूरे समाज में प्रेम एवं मित्रता का वातावरण बनें। श्री सत्यकेतु सिंह ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया और सभी को प्रसाद भी वितरित किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।